संस्कृतविभागः
चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा

{हरियाणा राज्य विधानमण्डल अधिनियम, 2003 (संख्यांक 9) द्वारा स्थापित}
राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा "बी" श्रेणी प्रत्यायित

सार्वभौमिक मानव मूल्य

(शिक्षा, स्वास्थ्य, समानता एवं विश्वबन्धुत्व के लिए)
(Non-credit course w.e.f. 2020-21)

Universal Human Value

(For Education, Health, Equality and Universal Brotherhood)
(Non-credit course w.e.f. 2020-21)

पाठ्यक्रम के लक्ष्य :

- ✓ *इस कार्यक्रम का लक्ष्य शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व के गुणात्मक (आध्यात्मिक) परिवर्तन लाने के लिए उनके प्रभाव के माध्यम से शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व (आध्यात्मिक) परिवर्तन है। उन्हें स्वयं और आत्म-जागरूकता की समझ विकसित करने में सक्षम बनाने के लिए, और दूसरों की देखभाल करने का एक दृष्टिकोण जैसा कि वे स्वयं की देखभाल करते हैं।*

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ *भारतीय और पश्चिमी दोनों दृष्टिकोणों से सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की प्रकृति को समझना।*
- ✓ *मनोवैज्ञानिक-दार्शनिक दृष्टिकोण में स्वयं और व्यक्तित्व को समझने और खोजने के लिए।*
- ✓ *भारतीय संविधान में निहित मूल्य के विशेष संदर्भ के साथ लोकतांत्रिक मूल्यों और लोकतांत्रिक जीवन की अनिवार्यताओं को समझना।*
- ✓ *समानता की समझ ।*
- ✓ *स्वास्थ्य, खुशी और सद्भाव के लिए योग की अनिवार्यताओं को समझने के लिए।*
- ✓ *विश्वबन्धुत्वभाव को विकसित करने के लिए ।*

पाठ्यक्रम का संपेषण :

- ✓ *जब पाठ्यक्रम को हस्तांतरित किया जाता है, तब विभिन्न सैद्धांतिक अवधारणाओं को स्पष्ट करने और व्यावहारिक उन्मुख दृष्टिकोण (अभ्यास या अनुभव आधारित) के उपयोग के लिए शिक्षक के हस्तक्षेप के साथ न्यूनतम अध्ययन (स्वाध्याय) के लिए विशेष बल दिया जाना चाहिए। उदाहरणों, संवादों, दृष्टांतों, कहानियों, नैतिक दुविधा की स्थितियों, प्रकृति अध्ययन, व्यक्तिगत अनुभवों और आत्म अन्वेषण के उदाहरणों के उपयोग द्वारा यह पुष्ट होना चाहिए।*

पाठ्यक्रम

इकाई- I

- सा विद्या या विमुक्तये।
- नैतिक और अन्य मानव मूल्यों को समझना - नैतिकता के लिए, सामाजिकता के लिए, भारतीय समाज के लिए, भारतीय संस्कृति के लिए
- सत्यं शिवं सुंदरम् (सत्य, अच्छाई और सौंदर्य),
- पुरुषार्थ (अर्थ, काम, धर्म, मोक्ष), आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास)
- श्रीमद्भगवद्गीता : कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं विज्ञानयोग ।
- नैतिकता का अर्थ और प्रकृति, नैतिकता का एक तर्कसंगत दृष्टिकोण, नैतिकता की भाषा, नैतिकता का रूप और सामग्री ।
- नैतिक निर्णय और नैतिक कार्रवाई, नैतिक विकास, नैतिक तर्क, नैतिक दायित्व और दोष, न्याय की नैतिकता और देखभाल, चरित्र और चरित्र की नैतिकता का विकास ।

इकाई – II

- आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पश्यति । एकत्वभाव ।
- स्वयं और व्यक्तित्व को समझना: - आत्म अवधारणा, आत्म जागरुकता और आत्म सम्मान को समझना, संवेदनशीलता और सहिष्णुता विकसित करना ।
- आत्मप्रबंधन ।
- आधारभूत मानवीय आवश्यकताओं और मानव समायोजन ।

इकाई – III

- सत्यमेव जयते ।
- योगस्थः कुरु कर्माणि ।
- समत्वं योगः उच्यते ।
- लोकतान्त्रिक जीवन की अनिवार्यता - लोकतंत्र और कल्याणकारी राज्य, समानता की अवधारणा, स्वतंत्रता और अनुशासन, इच्छाशक्ति की स्वायत्तता एक नैतिक दायित्व।
- विविधता और सामाजिक न्याय, अधिकार और दायित्व - भारतीय संविधान में वैज्ञानिक स्वभाव और अन्य मूल्य ।
- भेदभाव : प्रकृति और सीमा, दूसरों के साथ रहने के लिए आत्मावलोकन।

इकाई- IV

- योगः कर्मसु कौशलम् ।

- योग की आवश्यकता।
- पतंजलि एवं योग सूत्र - अष्टांग योग के विभिन्न अंगों को स्पष्ट रूप से समझना, यम(अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य) नियम(शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान), कुछ महत्वपूर्ण योग। आसन एवं प्राणायाम
- योग की तकनीकें/ ध्यान और उनके अभ्यास।
- सात्विक भोजन – स्वस्थ शरीर, मन एवं बुद्धि के लिए।

इकाई – V

- वसुधैव कुटुम्बकम्।
- जीवने यावदादानं स्यात् प्रदानं ततोऽधिकम्.....।
- व्यक्तिगत सद्भाव और सामाजिक सद्भाव।
- वैदिक काल से वर्तमान तक : मनुष्य और प्रकृति के बीच का संबंध, प्रकृति रक्षण के लिए प्रकृति-पूजा : एक दृष्टिकोण।
- संस्कृति एवं सभ्यताओं का उत्थान एवं पतन : मानवीय मूल्यों के परिवर्तन का कारण ?
- एक सर्वश्रेष्ठ सभ्यता एवं संस्कृति का आधार : सर्वश्रेष्ठ मानवीय मूल्य।
- मानव विकास, पारिस्थितिकी, पर्यावरण प्रदूषण और संसाधन की कमी के नैतिक आयाम।
- संसाधनों की कमी एवं हमारी नैतिकता।

Note:

- *मूल्यांकन का तरीका: सीसीई (सतत पाठ्यक्रम मूल्यांकन)*
  Mode of Evaluation : CCE (Continuous Course Evaluation)